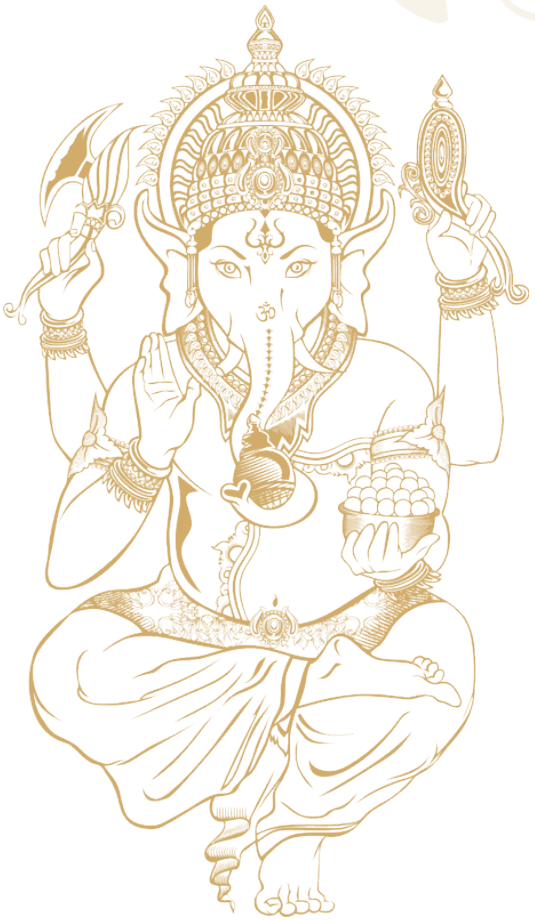

Sarita

19 Nov 1970

06:15 PM

Hardoi

Model: Baby-Horoscope **Order No: 119048001**

तिथि 19/11/1970 **समय** 18:15:00 **वार** गुरुवार **स्थान** Hardoi **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:27:09
अक्षांश 27:23:00 उत्तर **रेखांश** 80:06:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:09:36 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	21:57:56 घं
वेलान्तर	00:14:43 घं
सूर्योदय	06:32:56 घं
सूर्यास्त	17:16:47 घं
चैत्रादि संवत	2027
शक संवत	1892
मास	मार्गशीर्ष
पक्ष	कृष्ण
तिथि	7
नक्षत्र	आश्लेषा
योग	ब्रह्म
करण	विष्टि

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	मार्जार
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	श्वान
युँजा	मध्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	डी-डिंपल
पाया(रा.-न.)	ताम्र-रजत
होरा	बुध
चौघड़िया	अमृत

विंशोत्तरी
बुध 15वर्ष 8मा 1दि
चन्द्र
23/07/2019
22/07/2029

चन्द्र	22/05/2020
मंगल	21/12/2020
राहु	22/06/2022
गुरु	22/10/2023
शनि	22/05/2025
बुध	22/10/2026
केतु	23/05/2027
शुक्र	20/01/2029
सूर्य	22/07/2029

योगिनी
भ्रामरी 3वर्ष 8मा 7दि
सिद्धा
28/07/2021
28/07/2028

सिद्धा	07/12/2022
संकटा	27/06/2024
मंगला	06/09/2024
पिंगला	26/01/2025
धान्या	27/08/2025
भ्रामरी	07/06/2026
भद्रिका	28/05/2027
उल्का	28/07/2028

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			19:46:03	वृष	रोहिणी	3	चंद्र	केतु	---	0:00			
सूर्य			03:19:18	वृश्चि	विशाखा	4	गुरु	राहु	मित्र राशि	1.09	कलत्र	पितृ	मित्र
चंद्र			17:42:30	कर्क	आश्लेषा	1	बुध	बुध	स्वराशि	1.21	पुत्र	मातृ	जन्म
मंगल			25:38:46	कन्या	चित्रा	1	मंगल	राहु	शत्रु राशि	1.13	आत्मा	भ्रातृ	साधक
बुध		अ	16:23:59	वृश्चि	अनुराधा	4	शनि	गुरु	सम राशि	1.08	ज्ञाति	ज्ञाति	अतिमित्र
गुरु			25:16:43	तुला	विशाखा	2	गुरु	बुध	शत्रु राशि	1.03	अमात्य	धन	मित्र
शुक्र	व		18:59:44	तुला	स्वाति	4	राहु	चंद्र	मूलत्रिकोण	1.11	मातृ	कलत्र	वध
शनि	व		25:03:40	मेष	भरणी	4	शुक्र	बुध	नीच राशि	0.78	भ्रातृ	आयु	विपत
राहु	व		04:48:21	कुंभ	धनिष्ठा	4	मंगल	शुक्र	मित्र राशि		---	ज्ञान	साधक
केतु	व		04:48:21	सिंह	मघा	2	केतु	मंगल	शत्रु राशि		---	मोक्ष	सम्पत

लग्न-चलित

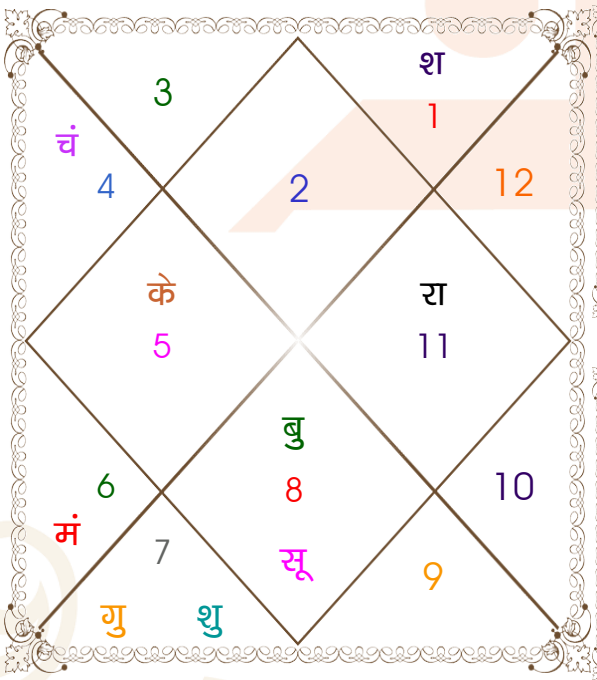

चन्द्र कुंडली

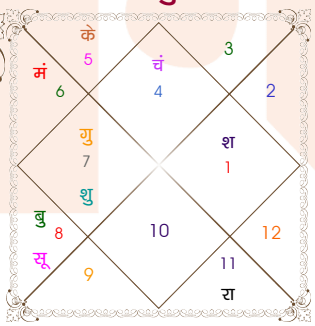

नवमांश कुंडली

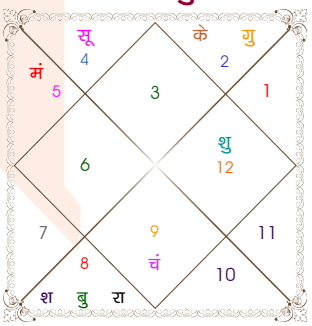

सर्वाष्टकवर्ग

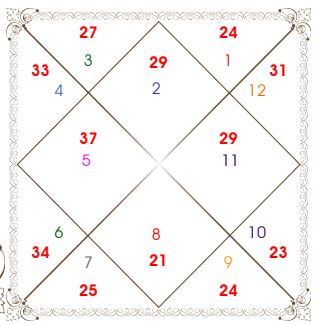

दशमांश कुंडली

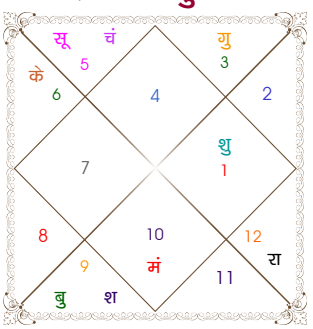

Trikal Jyotish Kendra
Mahavir Enclave
7042079557
saritaram.ram07@gmail.com

नक्षत्रफल

आप आश्लेषा नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्म राशि कर्क तथा राशि स्वामी चन्द्रमा होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी योनि मार्जार, गण राक्षस, वर्ण विप्र, वर्ग श्वान तथा नाड़ी अन्त्य होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "डि" या "डी" अक्षर से होगा यथा- डिम्पल आदि।

आश्लेषा नक्षत्र की गणना गण्डमूल नक्षत्रों में की जाती हैं। यद्यपि प्रथम चरण में उत्पन्न जातकों को इसका दोष अल्प मात्रा में होता हैं जो शान्ति करने से दूर हो जाता हैं। अतः जन्म समय में इसकी शान्ति अवश्य ही कर देनी चाहिए। इसके लिए इस नक्षत्र के 28000 जप किसी योग्य विद्वान से करवाने चाहिए तथा 28वें दिन जब यह नक्षत्र पुनः आवे तो जपे हुए मंत्रों के दशांश का हवन करना चाहिए। इससे गण्डमूल का दोष समाप्त हो जाएगा तथा आपको शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

मंत्र - ऊँ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।

अर्थात आश्लेषा नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य स्वस्थ शरीर वाला, माता पिता का भक्त, अपने धर्म में आस्था रखने वाला, नम्र, लोक में मान्य तथा धनवाहन आदि के सुख से परिपूर्ण होता है।

आप घूमने तथा यात्रादि करने में अपने अधिकांश समय को व्यतीत करेंगी। आपके स्वभाव में यदा कदा दुष्टता का भाव भी रहेगा तथा इस के कारण अन्य जन आपसे प्रसन्न नहीं रहेंगे। आपके पास धन की कमी नहीं रहेगी परन्तु अर्जित धन को आप अधिक मात्रा में व्यय करेंगी। आपकी प्रकृति अत्यधिक विलासी होगी जिससे आपका व्यय अधिक रहेगा।

वृथाटनः स्यादितिदुष्टचेष्टः कष्टप्रदाश्चापि वृथा जनानाम्।
सर्पि सदर्थोहि वृथार्पितार्थः कन्दर्पसंतप्तमना मनुष्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् आश्लेषा नक्षत्र में उत्पन्न जातक व्यर्थ घूमने वाला, दुष्ट प्रकृति से लोगों को कष्ट देने वाला, अपने उत्तम धन को वुरे कर्मो में खर्च करने वाला, विलासी तथा कामातुर रहता है।

अन्य लोगों की सुन्दर वस्तुओं के प्रति आपके मन मे आकर्षण रहेगा। आपका शारीरिक स्वास्थय भी मध्यम ही रहेगा। अन्य जनों द्वारा उपकृत होने पर भी आप उनके उपकार को अल्प ही क्रसवीकार नहीं करेंगी। इसके साथ ही आप पूर्वकृत कार्यो की ही पुनरावृति करने वाली होंगी।

लुब्धः खत्रजः कृशाङ्गश्च पुनः पुनः।

आश्लेषायां समुद्भूतः कृतकर्मा भविष्यति।।
जातक दीपिका

अर्थात आश्लेषा में जन्मा मनुष्य लोभी, लंगडा, कमजोर शरीर वाला, कृतघ्न तथा किये गये कार्यो को करने वाला होता है।

खाने पीने में आप भक्ष्य अभक्ष्य का भेद कम ही करेंगी। शाकाहारी या मांसाहारी दोनों प्रकार के भोजनों की आप प्रिय रहेंगी। आपके अधिकांश कार्य कठोर होंगे जिससे अन्य जन आपसे हमेशा परेशान रहेंगे। अवसरानुकूल आप मिथ्या भाषण का भी आश्वय ले सकती हैं। अच्छे कार्य आप अपने जीवन काल में सम्पन्न करती रहैंगी। साथ ही आपमें चालाकी तथा चतुरता का भाव भी विद्यमान रहेगा।

सर्वभक्षी कृतान्तश्च कृतघ्नो वञ्चकः खलः।
आश्लेषायां नरो जातः कृतकर्मा हि जायते।।
मानसागरी

अर्थात आश्लेषा में पैदा हुआ बालक सर्वभक्षी, कार्यकर्ता, कृतघ्न, ठग, दुर्जन तथा किये हुए कार्यो को करने वाला होता है।

ज्ञान का आप में अभाव नहीं रहेगा परन्तु बुद्धि मध्यम ही रहेगी। आप में क्रोध की मात्रा अधिक रहेगी तथा आचरण भी सामान्य ही होगा तथा आपके अधिकांश कार्य उग्रता से युक्त होंगे। साथ ही आप कृतज्ञता ा पूर्ण भाषण भी करेंगी।

सार्पे मूढ़मतिः कृतघ्नवचनः पापी दुराचार वान।
जातक परिजातः

अर्थात् आश्लेषा में उत्पन्न जातक मूढ़मति कृतघ्नतापूर्ण वाणी बोलने वाला, क्रोधी तथा दुराचारी होता है।

आप ताम्र पाद में पैदा हुई हैं। अतः आप आजीवन धनैश्वर्य से सर्वथा सम्पन्न रहेंगी एवं जीवन में धन का आपके पास अभाव नहीं रहेगा साथ ही सुखपूर्वक आप इसका उपभोग भी करेंगी। काव्य क्षेत्र में आप रूचिशील रहेंगी तथा इस क्षेत्र में सफलता भी अर्जित करेंगी। बन्धुवर्ग से आपके अत्यन्त ही मधुर संबंध रहेंगे तथा अपनी ओर से उन्हे प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। नवीन वस्त्रों को धारण करने में आप अत्यन्त ही रूचिशील रहेंगी तथा समय समय पर इसका संग्रह भी करेंगी। शरीर से आप पूर्ण बलशाली तथा स्वस्थ रहेंगी। आप एक पराक्रमी महिला होंगी तथा आपके प्रभुत्व को सभी लोग मन से स्वीकार करेंगे। साथ ही साहसिक कार्यो को करने में भी आप उत्सुक रहेंगी। जीवन में आप प्रायः प्रसन्नता की ही अनुभूति करेंगी लेकिन स्वभाव में कृपणता का भाव भी विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त आप एक विदुषी महिला होंगी तथा भाग्य से प्रबल रहेंगी।

कर्क राशि में जन्म लेने के कारण आपका शारीरिक स्वास्थय मध्यम रहेगा।

आप अपने समस्तकार्यों को चतुराई से सम्पन्न करने में सक्षम रहेंगी तथा जीवन में स्वयमोपार्जित धन से आप विपुल धन की स्वामिनी बनकर धनाढ्य कहलाएंगी। पराक्रमी होने से समाज में आपका पर्याप्त प्रभाव रहेगा। आप धर्म का भी अनुपालन करेंगी तथा धार्मिक भावनाओं से ओत प्रोत रहेंगी। विद्वानों तथा गुरूजनों की आप प्रिय रहेंगी तथा उनका स्नेह एवं आशीर्वाद की पात्र होगी। आप तीव्रबुद्धि की स्वामिनी होंगी जिसे अन्य लोग भी स्वीकार करेंगे। कभी कभी आप अत्यन्त दीनता के भाव की अनुभूति करेंगी। मित्रों से आप युक्त रहेंगी। आप एक से अधिक कार्य तथा कलाओं की ज्ञाता भी होंगी। आप में शारीरिक शक्ति अल्प मात्रा में ही रहेंगी तथा अपने घर से भी आपका विशेष लगाव नहीं रहेगा फलतः अन्यत्र स्थाई या अस्थाई रूप से प्रवास करेंगी।

कार्यकारी धनीशूरो धर्मिष्ठो गुरूवत्सलः।
शिरो रोगी महाबुद्धिः कृशाङ्गः कृत्यवित्तमः।।
प्रवासशीलः कोपाढ्योडबलो दुःखी सुमित्रकः।
अनासक्तो गृहे वक्रः कर्कराशौ भवेन्नरः।।
मानसागरी

आपकी प्रकृति वात तथा कफ से मिश्रित रहेगी तथा देखने में आप अत्यधिक सौन्दर्य की स्वामिनी होंगी। आप धनोपार्जन स्वयं करने में समर्थ रहेंगी। देवता तथा ब्राहमणों के प्रति आपके मन में अनन्य श्रद्धा का भाव रहेगा। उत्तम कुल में उत्पन्न लोगों की सेवा तथा सहायता करने में आप अपने को गौरवान्वित अनुभव करेंगी अतः इनकी सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहेंगी।

पवनकफशरीरो देव संकाश रूपः।
स्वयमुपचित्तवित्तो देवताविप्रभक्तः।।
कुलजन परिसेवी मण्डलाकार मध्ये।
भवति विपुलवित्तः कर्कटौ यस्यराशिः।।
जातक दीपिका

वेदादिशास्त्रों के अध्ययन तथा ज्ञान प्राप्त करने में आपकी रूचि रहेगी तथा इसके लिए आप परिश्रम करती रहेंगी। अन्य कलाओं की भी आप जानकारी रखने वाली होंगी। आपका श्रेष्ठ आचरण रहेगा फलतः सभी की प्रशंसा की पात्र बनी रहेंगी। आपको पुष्पों की सुगन्ध तथा जल में क्रीड़ा करने पर अलौकिक आनन्द की प्राप्ति होगी। साथ ही अपनी तीव्र बुद्धि के द्वारा आप समाज में प्रख्यात तथा कीर्ति से युक्त रहेंगी।

श्रुतकलाबलनिर्मलवृतयः कुसुमगंध जलाशयकेलयः।
किल नरास्तु कुलीरगते विधौ वसुमतीसुमती स्मितलब्धयः।
जातकाभरणम्

पति को पूर्ण रूप से अपने वश में रखने में आप सफल रहेंगी। आप अच्छे मित्रों से

हमेशा युक्त रहेंगी। जलक्रीड़ा से आप आनन्दित होंगी। साथ ही आप बहुत से भवनों की निर्माण करने वाली या बहुत से मकानों की स्वामिनी भी हो सकती हैं। आप मध्यम कद की रहेंगी तथा टेढी चाल से शीघ्र गति से चलना आपको प्रिय लगेगा। साथ ही आप थोड़े पुत्रों से युक्त रहेंगी।

स्त्रीनिर्जितः पीनगलः सन्मित्रो वहवालयास्तुकट्यिर्धनाढ्यः।
ह्रस्वश्च वक्रो द्रुतगः कुलीरे मेधान्वितस्तोयरतोऽल्प पुत्रः।।
फल दीपिका

आप अपने जीवन में नाना प्रकार की सम्पतियों की स्वामिनी बनेंगी। आपको ज्योतिष शास्त्र का ज्ञान होगा तथा इसके प्रति हार्दिक श्रद्धा भी रहेगी। आपके जीवन में उत्थान पतन का संघर्ष चलता रहेगा जिस प्रकार चन्द्रमा की कलाएं क्षयवृद्धि को प्राप्त होती हैं उसी प्रकार आपका जीवन भी उतार चढाव से पूर्ण रहेगा। आपको प्यार या प्रेम से ही वश में किया जा सकता हैं। दवाब या बलपूर्वक आपसे कुछ भी नहीं करवाया जा सकेगा। मित्रों को आप पूर्ण सम्मान प्रदान करेंगी अतः उनकी प्रिय बनी रहेंगी। साथ ही आप जीव पालने, उद्यान तथा जलाशयादि के निर्माण कार्य में भी पर्याप्त रूचि रखेंगी।

आवकद्रुतगः समुन्नतकटिः स्त्रीनिर्जितः सत्सुहृद्।
देवज्ञा प्रचुरालयः क्षयधनैः सयुंज्यतेः चन्द्रवत्।।
ह्रस्वः पीनगलः समेति च वशं साम्ना सुहृदवत्सलः।
तोयोद्यानरतः स्ववेश्मसहितै जातः शशाळङ्कैः नरः।।
बृहज्जातकम्

आप एक सौभाग्यवती महिला होंगी तथा आपके अधिकांश कार्य भाग्यबल से सफल होंगे। धैर्य का पालन करना आपका एक प्रमुख गुण रहेगा तथा प्रत्येक कार्य को धैर्यपूर्वक सम्पन्न करेंगी उसमें कोई उतावली या शीघ्रता का प्रदर्शन नहीं करेंगी। साथ ही अपने मकान का सुख भी आप प्राप्त करेंगी। आप अपने अधिकांश समय को भ्रमण या यात्राओं में व्यतीत करेंगी तथा आपका अन्य जनों से विनम्रता का व्यवहार रहेगा अतः सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे।

आप कृतज्ञ होंगी अर्थात् अन्य जनों द्वारा उपकृत होने पर उनके उपकार को मानेंगी। आप राज्य के किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद पर भी सुशोभित हो सकती हैं। आप हमेशा सत्य तथा प्रिय वाणी बोलने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी।

युक्तः सौभाग्ययोग्यैगृह सुहृदरटन ज्यौतिषज्ञान शीलैः।
कामासक्तकृतज्ञः क्षितीपतिसचिवः सत्प्रमाण प्रवासी।।
सोन्मादः केशकल्पो जलकुसुमरुचि र्हानिवृद्धयानुयातः।
प्रासादोद्यानवाणीप्रियकरणरतः पीनकण्ठः कुलीरे।।
सारावली

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आप कभी कभी अधिक बोलेंगी साथ ही आपके हृदय में दया एवँ करूणा का भाव अल्प मात्रा में रहेगा। परन्तु आप साहसी होंगी तथा

साहस पर्वक अपने समस्त कार्यों को सम्पन्न करेंगी। आप छोटी बातों में उत्तेजित तथा क्रोधित हो जाएंगी। अपने कार्य की सिद्धि के लिए आप किसी भी कार्य को करने के लिए तत्पर रहेंगी। आप में शारीरिक शक्ति की प्रधानता रहेगी। इसके साथ ही कभी कभी अन्य जनों से आपका विवाद भी होता रहेगा। अतः संयम पूर्वक दूसरे लोगों से व्यवहार करना चाहिए।

आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी ग्रसित हो सकती हैं। आपका चेहरा देखने में मध्यम होगा तथा वाणी भी कभी कभी कठोरता से युक्त होगी जिसे श्रोता सुनना कम ही पसन्द करेंगे। अतः यत्नपूर्वक मधुर शब्दों का ही अपने वार्तालाप में प्रयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

मार्जार योनि में पैदा होने के कारण आप नैसर्गिक रूप से वीरता के भाव से युक्त रहेंगी तथा अपने अधिकांश कार्यों को चतुराई से सम्पन्न करेंगी। मधुर भोजन तथा मधुर पेय का सेवन आपको अत्यन्त ही रूचिकर लगेगा। आप में निर्भीकता के भाव की प्रवलता रहेगी तथा बिना किसी भय के अपने जीवन मार्ग में अग्रसर होती रहेंगी। परन्तु कभी कभी आपके स्वभाव में दुष्टता का भाव भी उत्पन्न होगा तथा कठोर कर्मों की ओर आपकी प्रवृति होगी।

शूरः स्वकार्येदक्षश्च मिष्ठानपान भक्षकः।
निर्भयो दुस्वभावश्च नरो मार्जार योनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मार्जार योनि में उत्पन्न बालक वीर, अपने कार्यों को निपुणता से करने वाला, मिष्ठानपान भक्षण प्रेमी तथा दुष्ट स्वभाव वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक कष्ट नहीं होगा। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह की भावना रहेगी तथा जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको निश्छल भाव से सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप में शक्ति, साहस एवं पराक्रम का भाव भी उन्हीं के प्रोत्साहन से जागृत होगा। साथ ही आपको सुन्दर भोजन कराने के लिए भी वे नित्य उत्सुक एवं तत्पर रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति विशेष श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी बातों से सहमत होकर उनकी आज्ञा का पालन करेंगी। इसके साथ ही जीवन में सर्वप्रकार के तन, मन, धन से उनको सहयोग देने के लिए तत्पर रहेंगी अतः एक दूसरें के लिए आप शुभ एवं अनुकूल रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति सप्तम भाव में है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके शुभ प्रभाव से धनलाभ प्राप्त करने में वे सफल होंगे तथा जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता एवं सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह कराने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। साथ ही आप उनकी विश्वास पात्र भी होंगी।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन में भी नित्य रूचिशील रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा कुछ सैद्धान्तिक मतभेद भी होंगे जिससे सम्बन्धों में क्षणिक तनाव एवं कटुता उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समयोपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनकी सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगी।

आपके जन्म समय में मंगल पंचम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का आप मध्यम रूप से सुख प्राप्त करेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु कभी कभी शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे। जीवन में वे आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अपना योगदान प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता देंगे। इसके साथ ही शिक्षा संबंधी कार्यों में भी आप उनका वांछित सहयोग प्राप्त करेंगी।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंध भी प्रायः मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों से संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होंगे परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही सामान्य हो जाएगा। आप सुख दुःख में हमेशा उनका सहयोग करेंगी एवं अपनी ओर से कभी भी उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी। इसके अतिरिक्त अवसरानुकूल आप उन्हें आर्थिक सहायता भी प्रदान करेंगी। इस प्रकार आप मध्यम रूप से एक दूसरे का सुख प्राप्त करेंगे।

आपके लिए पौष मास, द्वितीया, सप्तमी तथा द्वादशी तिथियां, अनुराधा नक्षत्र, व्याघात योग, नागकरण, बुधवार तृतीय प्रहर तथा मीन राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फलदायक हैं। अतः आप 15 दिसम्बर से 14 जनवरी के मध्य तथा उपरोक्त योगों में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक अशान्ति, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्ति में बाधाएं उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट शंकर भगवान को नित्य शिवालय जाकर विल्वपत्र अर्पण करने चाहिए तथा सोमवार के व्रत भी रखने चाहिए। साथ ही श्वेत मोती, श्वेत वस्त्र, श्वेत पुष्प, चावल इत्यादि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 10000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फल कम होकर शुभ फलों में वृद्धि होगी एवं लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ॐ श्रां श्रीं श्रों सः चन्द्रमसे नमः।
मंत्र- ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः।

Trikal Jyotish Kendra
Mahavir Enclave
7042079557
saritaram.ram07@gmail.com